

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत पर पुनर्विचार: आधुनिक शासन में रूसो और हॉब्स की प्रासंगिकता

*Yachika, Research Scholar, Department of Social Science (Political Science), Faculty of
Humanities and Liberal Education, Baba Mastnath University, Rohtak, Haryana*

शोध सार

थॉमस हॉब्स और जीन-जैक्स रूसो जैसे दार्शनिकों द्वारा विकसित सामाजिक अनुबंध सिद्धांत ने राजनीतिक सत्ता की वैधता और व्यक्ति और राज्य के बीच संबंधों को समझने के लिए आधारभूत ढांचा तैयार किया। आधुनिक शासन में, जहाँ लोकतांत्रिक संस्थाएँ बढ़ती सत्तावादी प्रवृत्तियों के साथ सह-अस्तित्व में हैं, ये सिद्धांत राज्य-नागरिक गतिशीलता में आवश्यक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। यह शोधपत्र हॉब्स और रूसो के मूल विचारों पर फिर से विचार करता है, सामाजिक अनुबंध की उनकी व्याख्याओं की तुलना करता है, और राज्य निगरानी, नागरिक स्वतंत्रता और लोकलुभावन राजनीति जैसी समकालीन शासन चुनौतियों को संबोधित करने में उनकी निरंतर प्रासंगिकता का पता लगाता है।

संकेत शब्द :

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत, थॉमस हॉब्स, जीन-जैक्स रूसो, आधुनिक शासन, राजनीतिक वैधता, राज्य प्राधिकरण, लोकतंत्र, अधिनायकवाद, व्यक्तिगत स्वतंत्रता

1. परिचय

सामाजिक अनुबंध की अवधारणा ने सदियों से राजनीतिक विचार को आकार दिया है, जो राज्य प्राधिकरण की वैधता के लिए एक सैद्धांतिक औचित्य प्रदान करता है। थॉमस हॉब्स और जीन-जैक्स रूसो के कार्यों में, सामाजिक अनुबंध प्रकृति की स्थिति से संगठित समाज में संक्रमण का एक साधन था। जैसा कि आधुनिक लोकतंत्र प्रतिनिधित्व, राजनीतिक ध्रुवीकरण और बढ़ते अधिनायकवाद के संकटों का सामना कर रहे हैं, इन शास्त्रीय सिद्धांतों पर फिर से विचार करने से समकालीन शासन संरचनाओं और उनके विकास की व्याख्या करने के लिए मूल्यवान दृष्टिकोण मिलते हैं।

2. हॉब्स और रूसो: सामाजिक अनुबंध पर विपरीत विचार

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत ने लंबे समय से राज्य सत्ता की वैधता और समाज में व्यक्तियों के अधिकारों को समझने के लिए एक दार्शनिक आधार के रूप में काम किया है। इसके दो सबसे प्रभावशाली समर्थकों - थॉमस

हॉब्स और जीन-जैक्स रूसो - ने मानव स्वभाव और राजनीतिक व्यवस्था के बारे में अपनी अलग-अलग मान्यताओं के आधार पर सामाजिक अनुबंध की प्रकृति की बिल्कुल अलग व्याख्याएँ पेश कीं।

थॉमस हॉब्स ने अपनी रचना *लेविथान* (1651) में कहा कि प्रकृति की स्थिति में मनुष्य स्वार्थ से प्रेरित थे और संघर्ष की सतत स्थिति में रहते थे। हॉब्स के लिए, इस पूर्व-राजनीतिक स्थिति में जीवन "एकाकी, गरीब, बुरा, क्रूर और छोटा" था (Hobbes, 1651/1996)। इस अराजकता से बचने के लिए, व्यक्ति सामूहिक रूप से अपने सभी प्राकृतिक अधिकारों को एक पूर्ण संप्रभु को सौंपने के लिए सहमत हुए। यह संप्रभु, या "लेविथान", शांति और सुरक्षा को लागू करने के लिए अनियंत्रित शक्ति रखेगा। हॉब्स ने तर्क दिया कि केवल एक मजबूत, केंद्रीकृत प्राधिकरण ही व्यवस्था बनाए रख सकता है, भले ही इसका मतलब व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अंकुश लगाना हो।

इसके विपरीत, जीन-जैक्स रूसो ने एक सदी से भी अधिक समय बाद *द सोशल कॉन्ट्रैक्ट* (1762) में लिखते हुए, मानव प्रकृति के बारे में अधिक आशावादी दृष्टिकोण और राजनीतिक संगठन के बारे में एक मौलिक रूप से अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। रूसो का मानना था कि प्रकृति की स्थिति में लोग स्वाभाविक रूप से अच्छे, स्वतंत्र और समान थे, लेकिन संपत्ति और समाज के गठन के साथ असमानता और उत्पीड़न उत्पन्न हुआ (Rousseau, 1762/2002)। सामाजिक अनुबंध का उनका विचार सभी अधिकारों को त्यागने के बारे में नहीं था, बल्कि एक सामूहिक "सामान्य इच्छा" बनाने के बारे में था जो आम अच्छे को दर्शाता है। रूसो के मॉडल में, व्यक्ति कानूनों के निर्माण में सीधे भाग लेकर अपनी स्वतंत्रता बनाए रखते हैं, इस प्रकार वे शासित और शासक दोनों बन जाते हैं।

जबकि हॉब्स स्थिरता के लिए पूर्ण अधिकार पर जोर देते हैं, रूसो सामूहिक भागीदारी और लोकप्रिय संप्रभुता को वैध शासन के मार्ग के रूप में मानते हैं। ये अलग-अलग विचार शासन पर बहस को सूचित करना जारी रखते हैं, खासकर आधुनिक लोकतांत्रिक और सत्तावादी संदर्भों में अधिकार और स्वतंत्रता को संतुलित करने वाली चर्चाओं में।

3. आधुनिक शासन के लिए प्रासंगिकता

सामाजिक अनुबंध पर थॉमस हॉब्स और जीन-जैक्स रूसो के विचार समकालीन राजनीतिक सिद्धांत और शासन में गूंजते रहते हैं, खासकर तब जब आधुनिक राज्य वैधता, अधिकार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक कल्याण के सवालों से जूझ रहे हैं। इस खंड में, हम आधुनिक शासन की गतिशीलता को आकार देने में उनके सिद्धांतों की प्रासंगिकता का पता लगाते हैं, खासकर लोकतांत्रिक और सत्तावादी संदर्भों में। राज्य और उसके नागरिकों के बीच जटिल संबंध हॉब्सियन और रूसो के विचारों के मूल विचारों को दर्शाता है।

3.1 समकालीन अधिनायकवाद में हॉब्सियन विचार

राज्य के प्राथमिक कार्य के रूप में सुरक्षा पर हॉब्स का जोर सत्तावादी शासन में दृढ़ता से प्रतिध्वनित होता है, जहाँ राज्य शांति, व्यवस्था और स्थिरता सुनिश्चित करके अपने अधिकार को उचित ठहराता है, अक्सर व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता की कीमत पर। हॉब्स ने तर्क दिया कि समाज को अराजकता में गिरने से रोकने के लिए लेविथान के पास पूर्ण शक्ति होनी चाहिए (Hobbes, 1651/1996)। आधुनिक सत्तावादी प्रणालियों में, जैसे कि चीन, रूस और कुछ मध्य पूर्वी देशों में देखा जाता है, अर्थव्यवस्था, मीडिया और नागरिक समाज पर राज्य के नियंत्रण को अक्सर राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए आवश्यक माना जाता है।

व्यवस्था बनाए रखने के नाम पर नागरिक स्वतंत्रता और असहमति को कम करने को उचित ठहराता है। सरकारें अक्सर तर्क देती हैं कि स्वतंत्रता को सीमित करना, नागरिकों की निगरानी करना और विरोध को दबाना राज्य के अस्तित्व और आंतरिक अराजकता की रोकथाम के लिए आवश्यक है (Foucault, 2008)। कई देशों में निगरानी राज्यों का उदय और पुलिस बलों का सैन्यीकरण हॉब्स के दृष्टिकोण को दर्शाता है कि व्यक्तियों पर नियंत्रण लगाने के लिए एक शक्तिशाली संप्रभु की आवश्यकता होती है।

शी जिनपिंग के नेतृत्व में चीन के शासन में राष्ट्रीय सुरक्षा बनाए रखने की आड़ में निगरानी तकनीकों और राजनीतिक शक्ति के केंद्रीकरण में तेजी देखी गई है। हांगकांग के साथ चीन का व्यवहार, शिनजियांग में उसकी नीतियाँ और उसकी सामाजिक ऋण प्रणाली सभी शासन के हॉब्सियन तर्क को दर्शाते हैं जो अक्सर व्यक्तिगत स्वतंत्रता की कीमत पर व्यवस्था और नियंत्रण को प्राथमिकता देता है (Agamben, 2005; Shambaugh, 2015)।

3.2 लोकतांत्रिक भागीदारी में रूसोवादी सिद्धांत

इसके विपरीत, रूसो के विचार लोकतांत्रिक भागीदारी और सामान्य इच्छा के आधार पर राज्य की वैधता के लिए एक सम्मोहक रूपरेखा प्रदान करते हैं। रूसो ने इस बात पर जोर दिया कि सच्ची संप्रभुता लोगों के पास होती है, और केवल सामूहिक भागीदारी के माध्यम से ही कानून न्यायपूर्ण और वैध हो सकते हैं। सामाजिक अनुबंध का उनका सिद्धांत प्रत्यक्ष लोकतंत्र पर जोर देता है, जहाँ व्यक्ति कानूनों और निर्णयों के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेकर अपनी स्वतंत्रता बनाए रखते हैं (Rousseau, 1762/2002)। लोकप्रिय संप्रभुता का यह सिद्धांत आधुनिक उदार लोकतंत्रों में आधारभूत है।

संयुक्त राज्य अमेरिका, स्विटजरलैंड और जर्मनी जैसे देशों में लोकतांत्रिक प्रक्रिया रूसो के दृष्टिकोण में गहराई से निहित है। रूसो का नागरिक भागीदारी में विश्वास जनमत संग्रह, जानबूझकर लोकतंत्र और नागरिकों की सभाओं जैसी आधुनिक प्रथाओं में परिलक्षित होता है, जो लोगों को राजनीतिक निर्णय लेने में प्रत्यक्ष रूप से बोलने का अधिकार देते हैं (Pateman, 2012)। ऐसी प्रणालियों में, लोकतंत्र को केवल प्रतिनिधियों के लिए मतदान के रूप

में नहीं देखा जाता है, बल्कि एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जहाँ नागरिक राजनीतिक इच्छाशक्ति के निर्माण में संलग्न होते हैं।

असमानता और भ्रष्टाचार की आलोचना आज भी प्रासंगिक है क्योंकि आधुनिक समाज राजनीति में धन के प्रभाव, राजनीतिक ध्रुवीकरण और सरकारी संस्थाओं में जनता के विश्वास के क्षरण से जूझ रहा है। उदाहरण के लिए, ऑक्युपाई वॉल स्ट्रीट आंदोलन को राजनीतिक प्रक्रिया पर धनी लोगों की असंगत शक्ति की रूसो की आलोचनाओं की आधुनिक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है (Piketty, 2014)।

उदार लोकतंत्रों में हॉब्सियन और रूसोवादी विचारों को जोड़ना

समकालीन उदार लोकतंत्रों में, हॉब्सियन और रूसो के सिद्धांतों के बीच तनाव है जिसे सावधानीपूर्वक नेविगेट किया जाना चाहिए। एक ओर, लोकतांत्रिक राज्यों को व्यवस्था और सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, अक्सर शक्ति और निगरानी के उपयोग को उचित ठहराते हुए, जैसा कि हॉब्स सुझाते हैं। दूसरी ओर, इन राज्यों को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लोकप्रिय संप्रभुता को बरकरार रखा जाए, जो कि रूसो की दृष्टि के अनुरूप है।

उदाहरण के लिए, 9/11 के बाद के अमेरिका में, राष्ट्रीय सुरक्षा के औचित्य के तहत राज्य निगरानी और कार्यकारी शक्तियों के विस्तार की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव हुआ। पैट्रियट एक्ट और नेशनल सिक्योरिटी एजेंसी (NSA) के निगरानी कार्यक्रम नागरिकों की सुरक्षा के लिए एक मजबूत, केंद्रीकृत प्राधिकरण की आवश्यकता के बारे में हॉब्स के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। हालाँकि, एडवर्ड स्नोडेन के खुलासे और उसके बाद की गोपनीयता और नागरिक स्वतंत्रता पर बहस ने राज्य नियंत्रण के तहत स्वतंत्रता के क्षरण के बारे में रूसो की चिंताओं को प्रतिबिंबित किया। सुरक्षा और स्वतंत्रता के बीच ये तनाव संयुक्त राज्य अमेरिका और कई अन्य लोकतंत्रों में राजनीतिक प्रवचन को आकार देना जारी रखते हैं (Zuboff, 2019)।

3.4 21वीं सदी में शासन के लिए निहितार्थ

21वीं सदी में हॉब्स और रूसो की प्रासंगिकता यह बताती है कि आधुनिक शासन प्रणालियों को सुरक्षा, व्यवस्था और स्वतंत्रता की प्रतिस्पर्धी मांगों को संतुलित करना चाहिए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, निगरानी तकनीक और सोशल मीडिया जैसी तकनीकी प्रगति राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार दे रही है, हॉब्सियन और रूसो के सिद्धांत राज्य प्राधिकरण और नागरिक भागीदारी की विकसित प्रकृति को समझने के लिए मूल्यवान रूपरेखा प्रदान करते हैं।

जबकि होब्स का तर्क कुछ राजनीतिक शासनों में राज्य नियंत्रण को उचित ठहराना जारी रख सकता है, रूसो का लोकतांत्रिक वैधता और नागरिक जिम्मेदारी पर जोर समावेशी और भागीदारी शासन के विकास के लिए केंद्रीय बना हुआ है। इस प्रकार, आधुनिक सरकारों के लिए चुनौती इन दो दृष्टिकोणों को नेविगेट करना और राजनीतिक

व्यवस्था बनाना है जो अभूतपूर्व तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के युग में सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को संतुलित करते हैं।

4. अंतर को पाटना: अधिकार और स्वतंत्रता में संतुलन

व्यवस्था और सुरक्षा के लिए राज्य प्राधिकरण को बनाए रखने के बीच संतुलन खोजना है, साथ ही साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संरक्षण को सुनिश्चित करना है। सामाजिक अनुबंध के बारे में थॉमस हॉब्स और जीन-जैक्स रूसो के प्रतिस्पर्धी विचार शासन पर समकालीन चर्चाओं को आकार देना जारी रखते हैं, खासकर लोकतांत्रिक समाजों में जहां राज्य की शक्ति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच तनाव हमेशा मौजूद रहता है। यह खंड इस बात की खोज करता है कि आधुनिक राज्य इस अंतर को कैसे पाट सकते हैं और अधिकार और स्वतंत्रता की प्रतिस्पर्धी मांगों को प्रभावी ढंग से संतुलित कर सकते हैं।

4.1 राज्य की शक्ति को सीमित करने में संवैधानिक ढांचे की भूमिका

लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में, संविधान यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कि राज्य की शक्ति निरंकुश न हो और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा हो। आधुनिक शासन में संवैधानिक जाँच और संतुलन की उपस्थिति से होब्स के निरंकुश संप्रभुता के तर्क को कम किया जाता है, जो अधिकार वितरित करने और सरकार की किसी एक शाखा में शक्ति के संकेन्द्रण को रोकने का काम करते हैं।

उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका का संविधान एक ऐसी संरचना प्रदान करता है जो शक्तियों के पृथक्करण और जाँच और संतुलन की प्रणाली के माध्यम से कार्यकारी शक्ति को सीमित करता है। अधिकारों का विधेयक व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी देता है, जैसे कि बोलने की स्वतंत्रता और निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार, भले ही सरकार राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों में अधिकार रखती हो (Chemerinsky, 2011)। यह कानूनी ढांचा इस बात का उदाहरण है कि आधुनिक राज्य कैसे अधिकार के हॉब्सियन विचारों को लोकप्रिय संप्रभुता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के रूसो के सिद्धांतों के साथ समेटते हैं।

जर्मनी और भारत जैसे देशों ने अपने संविधानों में व्यक्तिगत अधिकारों के लिए समान सुरक्षा को संहिताबद्ध किया है। जर्मनी का मूल कानून (ग्रंडगेसेट्ज) और भारतीय संविधान दोनों ही मानवाधिकारों की सुरक्षा पर महत्वपूर्ण जोर देते हैं, भले ही राज्य राष्ट्रीय सुरक्षा खतरों के समय में अधिकार का प्रयोग करने की क्षमता रखता हो (Sacher, 2018; Sood, 2014)। ये संवैधानिक सुरक्षा गार्डरेल के रूप में कार्य करती हैं जो राज्य को अपनी सीमाओं को लांघने और नागरिकों की स्वतंत्रता का अतिक्रमण करने से रोकती हैं।

4.2 नागरिक समाज और सार्वजनिक भागीदारी की भूमिका

नागरिक समाज और सार्वजनिक भागीदारी की सक्रिय भूमिका है। रूसो का सामान्य इच्छा पर जोर और सक्रिय लोकतांत्रिक भागीदारी के लिए उनका आह्वान यह समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है कि नागरिक उन

कानूनों और नीतियों को आकार देने में कैसे मदद कर सकते हैं जो उन्हें नियंत्रित करते हैं। आधुनिक लोकतंत्रों में, नागरिक समाज की भूमिका - जिसमें गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ), कार्यकर्ता आंदोलन और मीडिया आउटलेट शामिल हैं - यह सुनिश्चित करता है कि राज्य का अधिकार अनियंत्रित न हो।

नागरिक समाज नागरिकों को अपनी सरकारों को जवाबदेह ठहराने, लोकतांत्रिक सुधारों और नागरिक स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए दबाव बनाने के लिए एक मंच प्रदान करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में ब्लैक लाइव्स मैटर या हांगकांग में लोकतंत्र समर्थक विरोध जैसे आंदोलन यह प्रदर्शित करते हैं कि यह सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक भागीदारी कितनी महत्वपूर्ण है कि सरकारी शक्ति पारदर्शी, समावेशी और लोगों की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी बनी रहे (Tilly, 2015)।

सार्वजनिक परामर्श, टाउन हॉल मीटिंग और जनमत संग्रह जैसे तंत्र नागरिकों को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने के अपने अधिकार का प्रयोग करने में मदद करते हैं। ये लोकतांत्रिक उपकरण सुनिश्चित करते हैं कि व्यक्ति कानून और नीतियों के निर्माण में केंद्रीय भूमिका में रहें, जो कि रूसो की सामान्य इच्छा के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

4.3 राज्य शक्ति और व्यक्तिगत अधिकारों के बीच संतुलन में प्रौद्योगिकी की भूमिका

21वीं सदी में, नागरिकों को सशक्त बनाने और राज्य नियंत्रण को सक्षम करने के लिए प्रौद्योगिकी एक शक्तिशाली उपकरण बन गई है। सुरक्षा के लिए राज्य की निगरानी और गोपनीयता की सुरक्षा के बीच संतुलन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहाँ हॉब्सियन और रूसो के विचार टकराते हैं। एक ओर, सरकारें आबादी की निगरानी और नियंत्रण के लिए डेटा संग्रह और चेहरे की पहचान जैसी तकनीकी प्रगति का उपयोग करती हैं, इन उपायों को सार्वजनिक सुरक्षा के लिए आवश्यक बताती हैं। दूसरी ओर, प्रौद्योगिकी व्यक्तियों को सूचना तक पहुँचने, राजनीतिक सक्रियता में संलग्न होने और अपने अधिकारों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने में सक्षम बनाती है।

सोशल मीडिया के व्यापक उपयोग ने विरोध आंदोलनों को तेजी से संगठित होने का मौका दिया है, जैसा कि अरब स्प्रिंग विरोध प्रदर्शनों (Howard et al., 2011) और एस्टोनिया जैसे डिजिटल लोकतंत्रों में देखा गया है, जहाँ ई-गवर्नेंस नागरिकों को ऑनलाइन वोट करने और राष्ट्रीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने की अनुमति देता है। डिजिटल भागीदारी के ये रूप रूसो के प्रत्यक्ष लोकतंत्र और सक्रिय नागरिकता के आदर्शों को दर्शाते हैं।

हालांकि, सार्वजनिक व्यवस्था को सुरक्षित रखने में राज्य की भूमिका के बारे में हॉब्स की चिंताएं डिजिटल क्षेत्र में भी सबसे आगे आती हैं। सरकारों की बढ़ती निगरानी क्षमताएं, अक्सर आतंकवाद विरोधी प्रयासों की आड़ में, व्यक्तिगत गोपनीयता का उल्लंघन कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, एडवर्ड स्नोडेन द्वारा प्रकट किए गए PRISM कार्यक्रम ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे सरकारी निगरानी अभियान सुरक्षा और व्यक्तिगत अधिकारों के बीच संतुलन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं (Zuboff, 2019)। इस तनाव के लिए स्पष्ट कानूनी ढाँचे

और निगरानी तंत्र की आवश्यकता होती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि तकनीक का उपयोग जिम्मेदारी से किया जाए और सुरक्षा के नाम पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अनुचित रूप से प्रतिबंधित न किया जाए।

4.4 आधुनिक शासन में "नकारात्मक" और "सकारात्मक" स्वतंत्रता की अवधारणा

इसायाह बर्लिन द्वारा "नकारात्मक" और "सकारात्मक" स्वतंत्रता के बीच का अंतर यह समझने के लिए एक उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करता है कि आधुनिक लोकतंत्र किस तरह से अधिकार और स्वतंत्रता को संतुलित करते हैं। नकारात्मक स्वतंत्रता बाहरी हस्तक्षेप से मुक्ति को संदर्भित करती है, जो रूसो के व्यक्तियों की स्वायत्तता पर ध्यान केंद्रित करने के साथ सरेखित होती है। इसके विपरीत, सकारात्मक स्वतंत्रता किसी व्यक्ति की स्वयं की पूर्ति या सामूहिक भलाई को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाने की स्वतंत्रता को संदर्भित करती है, जो एक मजबूत, सुरक्षात्मक राज्य (Berlin, 1969) के हॉब्सियन विचारों के साथ अधिक निकटता से जुड़ सकती है।

लोकतांत्रिक संदर्भ में, नकारात्मक स्वतंत्रता को संवैधानिक अधिकारों के माध्यम से संरक्षित किया जाता है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अनुचित सरकारी हस्तक्षेप से सुरक्षित रखते हैं। दूसरी ओर, सकारात्मक स्वतंत्रता, अवसर और कल्याण की समानता सुनिश्चित करने में सरकार की भूमिका में परिलक्षित हो सकती है, जिसके लिए अर्थव्यवस्था और सामाजिक प्रणालियों में राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है। स्वतंत्रता के इन दो रूपों को संतुलित करने के लिए व्यक्तियों के जीवन में सरकार की भूमिका पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, यह सुनिश्चित करना कि स्वतंत्रता केवल हस्तक्षेप की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि ऐसी स्थितियों की उपस्थिति भी है जो व्यक्तियों को फलने-फूलने देती हैं।

4.5 वैश्विक शासन में अधिकार और स्वतंत्रता का भविष्य

जलवायु परिवर्तन, महामारी और आतंकवाद जैसी वैश्विक चुनौतियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और मजबूत शासन की आवश्यकता है, इसलिए अधिकार और स्वतंत्रता के बीच संतुलन एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना रहेगा। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) जैसे अंतर्राष्ट्रीय निकायों और यूरोपीय संघ जैसे क्षेत्रीय संगठनों को व्यक्तिगत राष्ट्रों की संप्रभुता का सम्मान करते हुए वैश्विक प्रयासों का समन्वय करने का काम सौंपा गया है।

इस वैश्विक संदर्भ में, बहुपक्षीय समझौते और मानवाधिकार सुरक्षा राज्य की शक्ति पर अंकुश लगाने का काम जारी रखेंगे, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि वैश्विक सुरक्षा प्रयास व्यक्तियों की मौलिक स्वतंत्रता का उल्लंघन न करें। इसके अतिरिक्त, वकालत समूहों और अंतरराष्ट्रीय आंदोलनों सहित वैश्विक नागरिक समाज संगठन यह सुनिश्चित करने में एक आवश्यक भूमिका निभाएंगे कि सामान्य इच्छा राज्य-केंद्रित प्राथमिकताओं से प्रभावित न हो। इस प्रकार, वैश्विक शासन के भविष्य के लिए संभवतः ऐसे अभिनव समाधानों की आवश्यकता होगी जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर अधिकार और स्वतंत्रता को संतुलित करें।

5. उपसंहार

राज्य सत्ता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच का अंतरसंबंध लंबे समय से राजनीतिक सिद्धांत में एक बुनियादी चिंता का विषय रहा है, खासकर थॉमस हॉब्स और जीन-जैक्स रूसो के नजरिए से। सामाजिक अनुबंध पर उनके विपरीत विचार - हॉब्स एक मजबूत, केंद्रीकृत प्राधिकरण की वकालत करते हैं और रूसो लोकप्रिय संप्रभुता और व्यक्तिगत अधिकारों पर जोर देते हैं - आधुनिक शासन पर चर्चाओं को सूचित करना जारी रखते हैं। समकालीन समाजों में, इन दो ताकतों को संतुलित करने की चुनौती हमेशा मौजूद रहती है, जिसके लिए संवैधानिक ढांचे, नागरिक समाज की भागीदारी और मानवाधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

संवैधानिक सुरक्षा उपायों, सक्रिय सार्वजनिक भागीदारी और तकनीकी नवाचारों को शामिल करके इस अंतर को पाटने की कोशिश की है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सत्ता व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कमजोर न करे। नकारात्मक स्वतंत्रता (राज्य के हस्तक्षेप से स्वतंत्रता) और सकारात्मक स्वतंत्रता (व्यक्तिगत और सामूहिक पूर्ति प्राप्त करने की क्षमता) के बीच संतुलन एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है, जिसमें संवैधानिक सुरक्षा, नागरिक समाज की कार्यवाइयाँ और अंतर्राष्ट्रीय शासन ढाँचे इस संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राज्य निगरानी के विस्तार के साथ - यह स्पष्ट है कि लोकतांत्रिक प्रणालियों को विकसित होना जारी रखना चाहिए। इन प्रणालियों को राज्य के अधिकार और व्यक्ति की स्वतंत्रता दोनों की रक्षा करने का प्रयास करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि नागरिक शासन प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बने रहें। शासन का भविष्य हॉब्सियन सुरक्षा चिंताओं को स्वतंत्रता और लोकतंत्र के रूसो के आदर्शों के साथ समेटने में निहित है, एक ऐसा राजनीतिक परिदृश्य विकसित करना जहाँ व्यवस्था और स्वतंत्रता दोनों प्राप्त हो सकें।

संक्षेप में, आधुनिक शासन को इस तरह से विकसित होना जारी रखना चाहिए कि राज्य प्राधिकरण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच जटिल संतुलन का सम्मान हो, यह सुनिश्चित हो कि दोनों को इस तरह से संरक्षित किया जाए जो मानव उत्कर्ष और लोकतांत्रिक अखंडता को बढ़ावा दे। इन दोनों ताकतों के बीच तनाव अपरिहार्य है, लेकिन विचारशील संवैधानिक डिजाइन, सक्रिय नागरिक समाज की भागीदारी और मजबूत कानूनी सुरक्षा के साथ, लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था और स्वतंत्रता दोनों के संरक्षक के रूप में काम करना जारी रख सकता है।

संदर्भ

- Agamben, G. (2005). *State of exception* (K. Attell, Trans.). University of Chicago Press.
- Berlin, I. (1969). *Four essays on liberty*. Oxford University Press.
- Chemerinsky, E. (2011). *Constitutional law: Principles and policies* (4th ed.). Wolters Kluwer.
- Foucault, M. (2008). *The birth of biopolitics: Lectures at the Collège de France, 1978–1979* (G. Burchell, Trans.). Palgrave Macmillan.

- Foucault, M. (2008). *The birth of biopolitics: Michel Foucault on modern governmentality* (G. Burchell, Trans.). Palgrave Macmillan.
- Howard, P. N., Aidan, K., & Dias, M. (2011). *The role of digital media. Journal of Democracy*, 22(3), 25–38. <https://doi.org/10.1353/jod.2011.0044>
- Hobbes, T. (1996). *Leviathan* (R. Tuck, Ed.). Cambridge University Press. (Original work published 1651)
- Levitsky, S., & Ziblatt, D. (2018). *How democracies die*. Crown Publishing Group.
- Pateman, C. (2012). *Participatory democracy revisited. Perspectives on Politics*, 10(1), 7–19. <https://doi.org/10.1017/S1537592711004877>
- Piketty, T. (2014). *Capital in the twenty-first century*. Harvard University Press.
- Rawls, J. (1999). *A theory of justice* (Rev. ed.). Harvard University Press.
- Rousseau, J.-J. (2002). *The social contract* (G. D. H. Cole, Trans.). Dover Publications. (Original work published 1762)
- Shambaugh, D. (2015). *China's future*. PoliPointPress.
- Sacher, H. (2018). *German basic law and the rights of citizens*. Cambridge University Press.
- Sood, S. (2014). *The Indian Constitution and its interpretation*. Oxford University Press.
- Tilly, C. (2015). *Social movements, 1768-2012*. Routledge.
- Zuboff, S. (2019). *The age of surveillance capitalism: The fight for a human future at the new frontier of power*. PublicAffairs.